1. कुमार विश्वास की कविताओं से चुनिंदा पंक्तियां

जवानी में कई ग़ज़लें अधूरी छूट जाती हैं कई ख़्वाहिश तो दिल ही दिल में पूरी छूट जाती हैं जुदाई में तो मैं उससे बराबर बात करता हूं मुलाक़ातों में सब बातें अधूरी छूट जा ती हैं ।

जो मैं या तुम समझ लें वो इशारा कर लि या मैंने भरोसा बस तुम्हारा था तुम्हारा कर लिया मैंने लहर है हौसला है रब है हिम्मत है दुआएं हैं किनारा करने वालों से किनारा कर लिया मैंने ।

मैं अपने गीत ग़ज़लों से उसे पैग़ाम करता हूं उसी की दी हुई दौलत उसी के नाम करता हूं हवा का काम है चलना दीये का काम है जलना वो अपना काम करती है मैं अपना काम करती हूं ।

किसी के दिल की मायूसी जहां से हो के गुज़री है हमारी सारी चालाकी वहीं पर खो के गुज़री है तुम्हारी और मेरी रात में बस फ़र्क़ इतना है तुम्हारी सो के गुज़री है हमारी रो के गुज़री है ।

पुकारे आंख में चढ़कर तो खूं तो खूं समझता है अंधेरा किसको कहते हैं ये बस जुगनू समझता है हमें को चांद तारों में भी तेरा रूप दिखता है मोहब्बत को नुमाइश को अदाएं तू समझता है ।

मोहब्बत एक एहसासों की पावन सी कहानी है कभी कबिरा दिवाना था कभी मीरा दिवानी है यहां सब लोग कहते हैं मेरी आंखों में आंसू हैं जो तू समझे तो मोती है जो ना समझे तो पानी है ।

समंदर पीर का अंदर है लेकिन रो नहीं सकता ये आंसू प्यार का मोती है इसको खो नहीं सकता मेरी चाहत को अपना तू बना लेना मगर सुन ले जो मेरा हो नहीं पाया वो तेरा नहीं हो सकता ।

इस अधूरी जवानी का क्या फ़ायदा बिन कथा नक कहानी का क्या फ़ायदा
जिसमें धुलकर नज़र भी न पावन बनी आंख में ऐसे पानी का क्या फ़ायदा
।।

दीपक कुमार सिंह (प्रबंधक)

कर्मचारी संख्या: 13129

.....
.....

2. <u>निष्कलंक प्रज्ञावतार</u>

अध्यात्म मार्ग पर जो चलते, वे सीमाबद्ध नहीं रहते,
वसुधा सारी उनकी होती, जो असीम बनकर रहते ॥

बुद्ध-महात्मा गांधी ने, अध्यात्म मार्ग अपनाया था,
वसुधैव कुटुम्बकम् भावभरा, अपना अपनत्व बढ़ाया था,
दायित्वों को छोड़ कभी भी, नहीं पलायन वे करते।
वसुधा सारी उनकी होती, जो असीम बनकर रहते ॥

कर्तव्य निभाना पड़ता है, रहकर पारिवारिक जीवन में,
सुविधाएँ सारी जीवन की, मिलतीं सामाजिक जीवन में,
मनुष्य एक सामाजिक प्राणी, हैं फर्ज चुकाते रहते।
वसुधा सारी उनकी होती, जो असीम बनकर रहते ॥

जनमानस के परिष्कार हित, विचार क्रांति अभियान चला,

कुप्रथाओं को हमें मिटाना, दूर करें जो सड़ा-गला,

अध्यात्म मार्ग पर चलने वाले, आदर्शों में जीते रहते।

वसुधा सारी उनकी होती, जो असीम बनकर रहते ॥

पुरुषार्थ अपरिमित करना है, मिलकर बढ़ते रहना है,

प्रज्ञा युग आने वाला है, संशय नहीं कुछ करना है,

युग को नवजीवन देने को, अवतार सदा आते रहते।

वसुधा सारी उनकी होती, जो असीम बनकर रहते ॥

निष्कलंक प्रज्ञावतार फिर से, धरती पर शुचि आया है,

विचार क्रांति का रूप अनोखा, उसने निज दिखलाया है,

समस्याएँ जैसी होती हैं, वैसा ही रूप गढ़ते रहते।

वसुधा सारी उनकी होती, जो असीम बनकर रहते ॥

नाम : प्रिया मल्ल

क.स: 34589

पद : कार्यालय सहायक

.....

.....

3. "शून्य कार्बन उत्सर्जन की राह"

धरती पर फैली धुएं की चादर
चारों ओर प्रदूषण की आफत
साँसों में घुली दूषित गंध
लेकर आई हज़ारों बीमारियों संग।

खुद से ही होगी ये पहल, लेना होगा हमें संकल्प
शून्य कार्बन उत्सर्जन यही एकमात्र विकल्प।

वाहनों से धुएं का कहर हटाना
विधयुत गाड़ियों की ओर कदम बढ़ाना
उधयोगों में होगा नवीनीकरण का जमाना
साफ़ और हरित ऊर्जा ही एक पैमाना।
वातानुकूलक यंत्र कम से कम चलना
प्रकर्ति की गोद मे समय बिताना

सूरज की किरणों से ऊर्जा का भंडार
हवा के झोके से बिजली का संचार
ध्वस्त न हो जंगलों का सौंदर्य
सृष्टि की सुरक्षा ही हमारा शौर्य।

कागज की बर्बादी को रोकेंगे हम,
पुनः चक्रण और पुनः उपयोग की राह चुनेंगे हम।
शहरों में हरियाली का विस्तार होगा,
हर पेड़ की शाख़ में नव जीवन संजीवनी का संचार होगा।

सपनों की खेती अब सच होगी,
वृक्षारोपण की धारा हर कोने में बहेगी

शुद्ध कार्बन की शून्यता का रंग लगाएंगे,
धरती के पुनरुद्धार की आशा को साकार बनाएंगे।

समाज का हर व्यक्ति साथ आए,
शून्य कार्बन उत्सर्जन का ये संकल्प निभाए।
धरती को बचाने का यही होगा सत्य उत्सव और प्रयास,
आने वाली पीढ़ी को दे एक हरित और स्वच्छ भविष्य का अटूट विश्वास ।

पारुल मिश्रा
12305
वरिष्ठ प्रबंधक

.....
.....

4. नर हो, न निराश करो मन को

नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो
जग में रह कर कुछ नाम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो, न निराश करो मन को
सँभलो कि सुयोग न जाए चला
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला
समझो जग को न निरा सपना
पथ आप प्रशस्त करो अपना
अखिलेश्वर है अवलंबन को
नर हो, न निराश करो मन को

जब प्राप्त तुम्हें सब तत्त्व यहाँ
फिर जा सकता वह सत्त्व कहाँ
तुम स्वत्त्व सुधा रस पान करो
उठके अमरत्व विधान करो
दवरूप रहो भव कानन को
नर हो न निराश करो मन को
निज गौरव का नित ज्ञान रहे
हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे
मरणोत्तैर गुंजित गान रहे
सब जाए अभी पर मान रहे
कुछ हो न तजो निज साधन को
नर हो, न निराश करो मन को
प्रभु ने तुमको दान किए
सब वांछित वस्तु विधान किए
तुम प्राप्तस करो उनको न अहो
फिर है यह किसका दोष कहो
समझो न अलभ्य किसी धन को
नर हो, न निराश करो मन को,
किस गौरव के तुम योग्य नहीं
कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं
जान हो तुम भी जगदीश्वर के
सब है जिसके अपने घर के
फिर दुर्लभ क्या उसके जन को
नर हो, न निराश करो मन को
करके विधि वाद न खेद करो
निज लक्ष्य निरंतर भेद करो
बनता बस उद्यम ही विधि है

मिलती जिससे सुख की निधि है
समझो धिक् निष्क्रिय जीवन को
नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो

राज कुमार
12542
वरिष्ठ प्रबंधक/वित्त

.....
.....

.....
.....

5. कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखराता है।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगता है,
जा जा कर खाली हाथ लौटकर आता है।
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में,

बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।
जब तक ना सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़ कर मत भागो तुम।
कुछ किए बिना ही जय जय कार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

नीलेश कुमार जैन
13577
सहायक प्रबंधक/वित्त

.....
.....

6. मेरी हिंदी वाणी

सरस, सुहावन मीठी ऐसी, ज्यों कोयल की वाणी
भाषाओ में शिरोमणि है मेरी हिंदी वाणी
लिपि वैज्ञानिक देवनागरी, महिमा अमित अपार
शब्दो और भावो के जिस्म भरे हुए भंडार।

अलंकार के संग-संग करते स्वर व्यंजन अगवानी
भाषाओ में शिरोमणि है, मेरी हिंदी वाणी
संस्कृत वाणी इसकी जननी तमिल-तेलुगू बहनें
बंगाली, उरिया, मलयालम, कन्नड़ के क्या कहें।

सबको आदर, सबको ममता इसकी यही कहानी
भाषाओ में शिरोमणि है मेरी हिंदी वाणी,
तुलसी का मानस है, सूर की सूरसागर,
सुरसिरता सूर्यकांत, जयशंकर, पंत के मन की सुमधुर कविता।

मीरा की ये गिरधर नागर, गुरुनानक की वाणी
भाषाओ में शिरोमणि है मेरी हिंदी वाणी।।

मो अयूब अंसारी
3024
विधुत अभियंता

.....
.....

7. अक्षय ऊर्जा का अलख

जब सूरज की किरणें बिखरती,
धरती पर उजियारा करती,
हवा की सरसराहट संग,
हम पाएं ऊर्जा का नया रंगा
अक्षय ऊर्जा की हो बयार,
हरियाली से हो संसार, सौर,
पवन और जल की धारा,
बनें स्वच्छ ऊर्जा का सहारा।

बढ़े कदम हम स्वच्छता की ओर,
अक्षय ऊर्जा का लें सहारा,
प्रकृति संग तालमेल बिठाएं,

हर जीव को जीवन दें नया सहारा।

सूरज की रोशनी से मिले उजाला,
पवन के झोंकों से ऊर्जा का निवाला,
जल की लहरों से मिले जोश,
अक्षय ऊर्जा से बढ़े विश्व का ओज ।

कोयला-तेल की निर्भरता घटाएं,
स्वच्छ ऊर्जा को अपनाएं,
पर्यावरण को बचाएं हम,
हर कदम पर स्वच्छता बढ़ाएं।

स्वच्छ वायु, निर्मल जल,
अक्षय ऊर्जा से भरपूर हो कल,
आओ मिलकर संकल्प लें,
हर घर में ऊर्जा का दीप जलाएं।

हरियाली का हो जब राज,
प्रदूषण न फैलाए अपनी बाज,
अक्षय ऊर्जा से चमके हर घर,
हमारा भारत बने ऊर्जा का स्वर।

इस हिन्दी दिवस पर हम,
प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी निभाएं,
हर व्यक्ति बनें ऊर्जा का प्रहरी,
स्वच्छ और सुंदर बने यह धरती हमारी ।।

वेद प्रकाश पांडे
30441
डी ई ओ

.....
.....

8. हिंदी भाषा

हिंदी मेरी माँ की बोली, भारत की पहचान है,
सादगी से भरी हुई, यह हमारी शान है।

हर शब्द में छिपी मिठास, हर अक्षर में है रंग,
हिंदी से जुड़े हुए, दिल में अपने ढेरों संग।

बातें इससे मन की कह दो, भावों का यह सार है,
संस्कृति की यह सजीव धारा, ज्ञान का यह आधार है।

बचपन से सिखाती यह, जीवन की हर राह,
सभी को जोड़ने वाली, यह है हिंदी भाषा का नाथ।

आओ मिलकर करें यह प्रण, हम इसे अपनाएँ,
हिंदी का मान बढ़ाएँ, हर दिल में इसे सजाएँ।

नाम कृष्णा कुमार
पद : कार्यालय सहायक
32535

.....
.....

9. सबके हिस्से में नहीं आता

ये जमी, ये आसमां ये खुशी,
ये मुस्कान रोटी, कपड़ा और मकान
सबके हिस्से में नहीं आता ।

ये एतबार, ये प्यार ये आसू, ये इंतजार सुकून भरा
एक इतवार सबके हिस्से में नहीं आता ।

ये मंजिल ये रास्ता, ये सफर ये रात,
ये शाम, ये शहर हाथ पकड़ के चले वो हमसफर
सबके हिस्से में नहीं आता ।

बेसक यह किस्से कहानी किसी किस्से मै नहीं आता
के जिंदगी मिलती है, मगर जीना सबके हिस्से में नहीं आता।।

नाम: राजा
अभियंता (IT)
30057

.....
.....

10.

तू जिंदगी को जी, उसे समझने की कोशिश ना कर,
सुंदर सपने के तने बने बन,
हमसे उलझने की कोशिश ना कर।।

चलते वक़्त के साथ भी चल,
हमसे मुलाकात की कोशिश ना कर
अपने हाथों में फेला, खुल कर सांस ले

अंदर ही अंदर घुटन की कोशिश ना कर।।

मन में चल रहे युद्ध को विराम दे,
खमाखाह खुद से लड़ने की कोशिश ना कर
कुछ बाते भगवान पर भी छोड़ दे ,
सब कुछ-कुछ सुलझाने की कोशिश न करें।।

जो मिल गया उसमें मैं खुश हूं
जो सुकून छीन ले, वो पाने की कोशिश ना कर।।

रास्ते की सुन्दरता का लुत्फ़ उठा
मंजिल पर जल्दी पहुंचने की कोशिश ना कर।।

प्रशांत सिंह
12862
प्रबंधक